# जनसंख्या वृद्धि एक अति आवश्यक मांग

लेखक :- नारायण साँई ( ओहम्मो )

प्रकाशक – ( एन .एस. एल.एस.ट्रस्ट)

# जनसंख्या वृद्धि एक अतिआवश्यक मांग

## *जनसंख्या वृद्धि से होगी देश में समृद्धि*

इस विश्व में जन-संख्या वृद्धि बहुत बड़ी समस्या है और यह कई समस्याओं की जड़ है | इसलिए बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने से समस्याएँ हल हो जाएँगी – ऐसी सोच रखनेवाला एक वर्ग है, जिसमें शायद वैज्ञानिक भी हैं और अधिकारी वर्ग (IAS, IPS) भी हैं, दुनिया के कई देशों के शासक हैं, स्वयं सरकार इस बात को मानती है और जनसंख्या नियंत्रण के लिए करोड़ों- अरबों रुपये खर्च करती है – पूरे देश में नसबन्दी, ऑपरेशन करवाने के लिए लोगों को प्रेरित करती है – अभियान चलाती है | भारत की बसों पर, गाँवों की दीवारों पर जगह-जगह हमने पढ़ा होगा –

"हम दो – हमारे दो"

## जनसंख्या वृद्धि एक अतिआवश्यक मांग

### “छोटा परिवार – सुखी परिवार”

परन्तु, हम इस बात से सहमत नहीं हैं | एक महत्त्वपूर्ण सवाल कई वर्षों से उठ रहा था कि ‘विश्व में सर्वश्रेष्ठ, या श्रेष्ठ से श्रेष्ठ, उत्तम से उत्तम प्रजा– बुद्धिमान, बहादुर, सद्गुणी, समझदार क्या कभी उत्पन्न हो सकती है ? क्या हम विश्व को सुन्दर, श्रेष्ठ प्रजा से युक्त कर सकते हैं ?

पूरे विश्व की नहीं, सिर्फ अपने राष्ट्र या राज्य की बात करो तो, क्या हम हमारे राज्य में उत्तम संतति की वृद्धि कर सकते

हैं ? अगर ऐसा हो जाए तो निश्चितरू प से समाज व राष्ट्र महान बन सकता है, इसमें कोई संशय नहीं है |

## जनसंख्या वृद्धि एक अतिआवश्यक मांग

भेड़ बकरियों की तरह मूर्ख, आलसी, बीमार, मनुष्यों का पैदा होना और अनियंत्रित रूप से बढ़ते जाना अच्छा नहीं है, शायद इस बात को सोचनेवाले ने ही 'जनसंख्या नियंत्रण अभियान' शुरू किया होगा |

भारत के महान महापुरुष श्रद्धेयरामसुखदासजी महाराज की विलक्षण बुद्धि ने इस विषय पर जो तर्क दिए हैं, गीताप्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित 'साधन-सुधा सिन्धु' ग्रंथ में उनके अनेक सत्संग प्रवचनों को संकलित करके प्रकाशित किया गया है | इस ग्रंथ में स्वामीजी ने जनसंख्या नियंत्रण के प्रयासको हानिकारक और हिन्दू हितों का विरोधी बताया है | यहाँ तक कि यह सरकार की अनधिकार चेष्टा बतलाया है और जनसंख्या वृद्धि से होनेवाले फायदों का जिक्र किया है |

कि, मैं अपने पुरुषार्थ से कमाकर परिवार का पालन-पोषण कर सकता हूँ |

सरकार का कर्त्तव्य अपने देश में जन्म लेनेवाले प्रत्येक नागरिक के जीवन-निर्वाह का प्रबंध करना है, न कि उसके जन्म पर ही रोक लगा देना |

जहाँ वृक्ष अधिक होते हैं, वहाँ वर्षा अधिक होती है, फिर मनुष्य अधिक होंगे तो क्या अन्न अधिक नहीं होगा ? पहले जनसंख्या कम थी तो अनाज विदेशों से मंगवाना पड़ता था, परन्तु अब जनसंख्या बढ़ गई तो अनाज, फल आदि वस्तुएँ विदेशों में भेजी जाती हैं |

यदि जनसंख्या बढ़ेगी तो उसके पालन-पोषण के साधन भी बढ़ेंगे, अन्न की पैदावार भी बढ़ेगी, वस्तुओं का उत्पादन भी बढ़ेगा, उद्योग भी बढ़ेगा | फिर जनसंख्या-

## -वृद्धि की चिंता क्यों?

मनुष्य के पास केवल पेट ही नहीं होता, बल्कि दो हाथ, दो पैर और एक मस्तिष्क भी होता है, जिनसे वह केवल अपना ही नहीं, बल्कि कई प्राणियों का भरण-पोषण कर सकता है | फिर जनसंख्या वृद्धि की चिंता क्यों ?

उत्पादन तो बढ़ाना चाहते हैं, पर उत्पादक - शक्ति (जनसंख्या) का ह्रास कर रहे हैं – यह कैसी बुद्धिमानी है ?एक-दो संतान होगी तो घर का काम ही पूरा नहीं होगा, फिर समाज का काम कौन करेगा ? खेती कौन करेगा ? सेना में कौन भरती होगा ? सच्चा मार्ग बतानेवाला साधू कौन बनेगा ? बूढ़े माँ-बाप की सेवा कौन करेगा ?

जन्म पर तो नियंत्रण, पर मौत पर नियंत्रण नहीं – यह

कैसी बुद्धिमानी ? जो मृत्यु पर नियंत्रण नहीं रख सकता, उसको जन्म पर भी नियंत्रण रखने का अधिकार नहीं है | अगर वह ऐसा करेगा तो इसका परिणाम नाश-ही-नाश होगा ! १०) कुत्ते, बिल्ली, सूअर आदि के एक साथ कई बच्चे होते हैं और वे संतति-निरोध भी नहीं करते, फिर भी उनसे सब सड़कें, गलियाँ भरी हुई नहीं दिखतीं | उनकी संख्या को कौन नियंत्रित करता है ?

११) मनुष्यों में हिन्दू जाती सर्वश्रेष्ठ है | इसमें बड़े विलक्षण ऋषि-मुनि, संत-महात्मा, दार्शनिक, वैज्ञानिक, विचारक पैदा होते आये हैं | जब इस जाति के मनुष्यों को जन्म ही नहीं लेने दिया जायेगा तो फिर ऐसे श्रेष्ठ, विलक्षण पुरुष कैसे और कहाँ पैदा होंगे ?

१२) वर्तमान वोट प्रणाली का जनसंख्या के साथ सीधा सम्बन्ध है | अतः जिस जाति की जनसंख्या अधिक होती है, वही जाति बलवान होकर (वोट के बल पर) देश पर राज्य करती है | जो जाति परिवार-नियोजन को अपनाती है, वह परिणाम में अपने अस्तित्व को ही नष्ट कर देती है |

१३) वर्तमान में परिवार-नियोजन और धर्मान्तरण के द्वारा हिन्दुओं की संख्या तेजी से कम हो रही है | फिर किसका राज्य होगा और क्या दशा होगी ? जरा सोचो !

१४) संतति निरोध के कृत्रिम उपायों के प्रचार-प्रसार से समाज में व्यभिचार, भोगपरायणता आदि दोषों की वृद्धि हो रही है, कन्याएँ और विधवाएँ भी गर्भवती हो रही हैं | लोगों में चरित्र, शील, संयम, लज्जा,

ब्रह्मचर्य आदि गुणों का ह्रास हो रहा है, जिससे देश का हर दृष्टि से घोर पतन हो रहा है |

१५) संतति निरोध के द्वारा नारी के मातृरूप को नष्ट करके उसको केवल भोग्या बनाया जा रहा है | भोग्या स्त्री तो वैश्या होती है | यह नारी-जाति का कितना बड़ा अपमान है !

१६) अगर संतान की इच्छा न हो तो संयम रखना चाहिए | संयम रखने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है, उम्र बढ़ती है, शारीरिक-पारमार्थिक सब तरह की उन्नति होती है |

१७) गर्भपात के समान दूसरा कोई भयंकर पाप है ही नहीं | संसार का कोई भी श्रेष्ठ धर्म इस महान पाप को समर्थन नहीं देता और न दे सकता है | क्योंकि, यह मनुष्यता के विरुद्ध है |

१८) जीवमात्र को जीने का अधिकार है | उसको गर्भ में ही नष्ट करके उसके अधिकार को छीनना महान पाप है |

१९) गर्भ में आये जीव को अनेक जन्मों का ज्ञान होता है, इसलिए भागवत में उसको 'ऋषि' (ज्ञानी) कहा गया है | अतः गर्भपात करने से एक ऋषि की हत्या, 'ब्रह्महत्या' का पाप माना जाता है | इससे बढ़कर पाप और क्या होगा ?

२०) मनुष्य शरीर को दुर्लभ बताया गया है | मनुष्य शरीर में आकर जीव अपना और दूसरों का भी कल्याण कर सकता है | परन्तु, उस जीव की जन्म लेने से पहले ही हत्या कर देना, कितना महान पाप है !

२१) गर्भ-स्थापन कर सकने के सिवाय कोई पुरुषत्व नहीं है और गर्भधारण कर सकने के सिवाय कोई स्त्रीत्व नहीं है | अगर पुरुष में पुरुषत्व न रहे और स्त्री में स्त्रीत्व न रहे तो वे मात्र भोगी जीव ही रहे, न मनुष्य रहे, न मनुष्यता रही !

२२) जो माता-पिता अपने बच्चे का स्नेहपूर्वक पालन और रक्षा करनेवाले होते हैं, वे ही अपने गर्भस्थ शिशु की देंगे

हत्या कर देंगे तो किससे रक्षा की आशा की जाएगी ?

२३) जन्म-मरण मनुष्य के नहीं ईश्वर और प्रकृति के हाथ में है | ईश्वर और प्रकृति के विधान से जनसंख्या का नियंत्रण अनादिकाल से स्वतः स्वाभाविक होता आया है | अगर मनुष्य उनके विधान में हस्तक्षेप करेगा तो इसका परिणाम बड़ा भयंकर होगा |

२४) वास्तव में परिवार-नियोजन कार्यक्रम से हिन्दुओं का जितना नुकसान हुआ है, उतना नुकसान मुसलामानों और ईसाइयों ने भी नहीं किया है और वे कर भी नहीं सकेंगे | १९९१ में लगभग १२ करोड़ बच्चों का जन्म रोका गया | यह जानकारी तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री ने राज्यसभा में दी थी | उस समय परिवार-नियोजन कार्यक्रम बहुत तेजी पर नहीं था |

## परिवार-नियोजन के दुष्परिणाम भुगत चुके देशों की प्रतिक्रिया

परिवार-नियोजन के दुष्परिणाम भुगतने के बाद अनेक देशों ने संतति-निरोध पर प्रतिबन्ध लगा दिया और जनसंख्या -वृद्धि के उपाय लागू कर दिए |

- जर्मनी की सरकार ने सन-१९३५ में कानून बनाया कि जिसके जितने बच्चे होंगे उसको उतनी अधिक इन्कम टैक्स में छूट मिलेगी | एक बच्चे पर १५%, दो पर ३५% आदि, जिससे वहाँ की जनसंख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई |
- फ्रांस की सरकार ने अधिक संतान पैदा करनेवालों के टैक्स कम कर दिये, उनका वेतन तथा पेंशन बढ़ा दिया, उनको अनेक प्रकार की आर्थिक सहायता दी जाने लगी और पुरस्कार भी दिए जाने लगे |
- इंग्लॅण्ड में जनसंख्या की वृद्धि के लिए एक रॉयल कमीशन की स्थापना की गई | जिसने जनसंख्या वृद्धि के लिए

अनेक उपायों की खोज की | सन-१९४९ में अधिक संतानवाले लोगों को टैक्स में राहत, पढ़ाई आवास आदि की सुविधाएँ एवं आर्थिक सहायता आदि प्रदान करने के कानून लागू किये गए |

उपर्युक्त देशों के सिवाय स्वीडन, इटली आदि देशों ने भी संतति-निरोध पर प्रतिबन्ध लगाया | इटली में तो यहाँ तक कानून बना दिया गया की संतति निरोध का प्रचार करनेवाले को एक वर्ष की कैद तथा जुरमाना किया जा सकता है |

आश्चर्य की बात है कि परिवार-नियोजन के जिन दुष्परिणामों को पश्चिमी देश भुगत चुके हैं, उनको देखने के बाद भी भारत सरकार इस कार्यक्रम को बढ़ावा दे रही है |

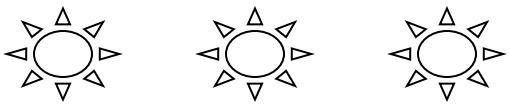

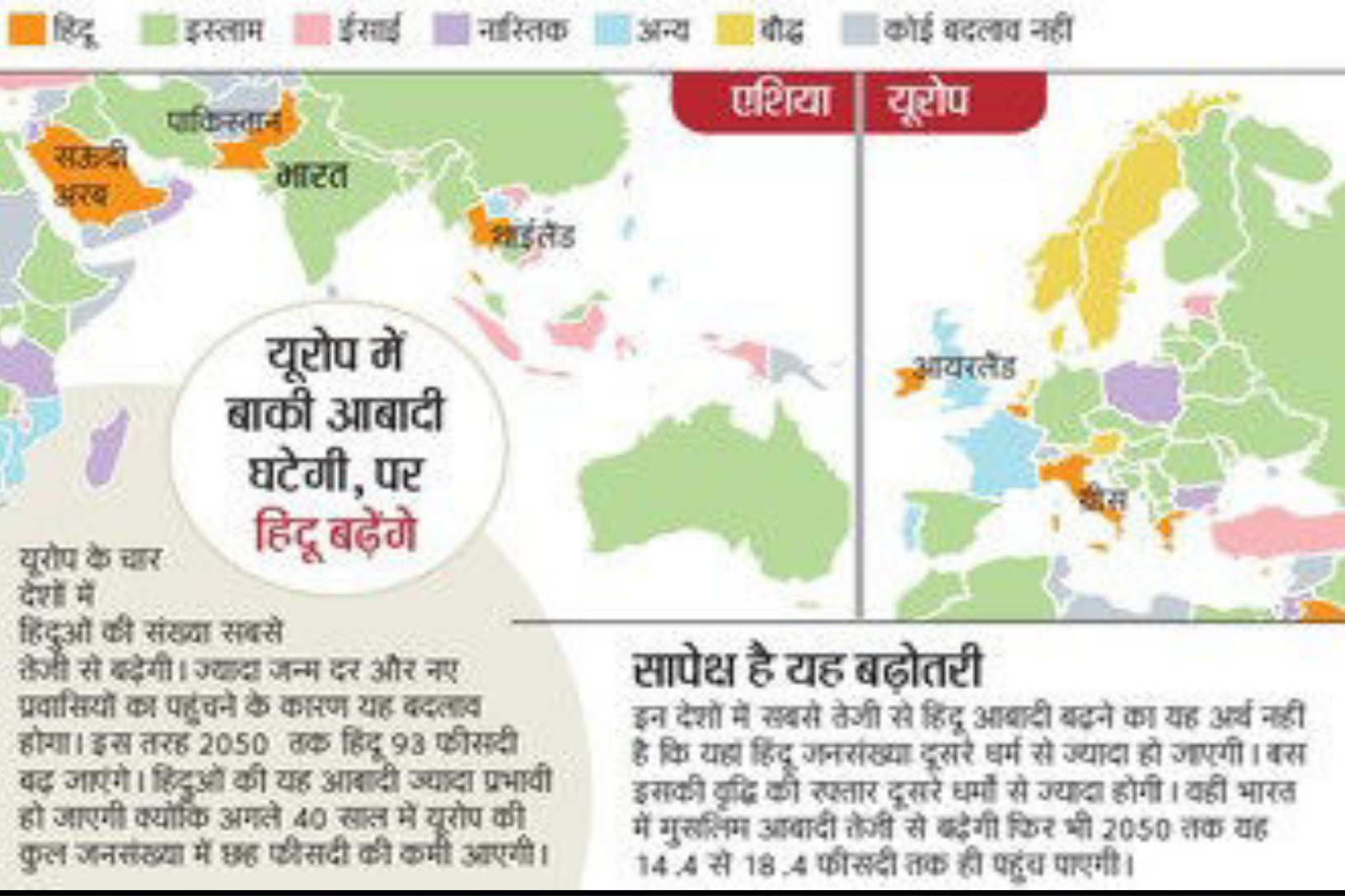

Contact & Whatsapp No. – 9033861741
www.nslst.org , www.ojaswi.co.in